बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय की स्थापना संसद द्वारा पारित एक अधिनियम (संख्या 58 सन् 1994) द्वारा की गई थी। विश्वविद्यालय 10.01.1996 को भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग की अधिसूचना संख्या 8-16/भारत सरकार/डेस्क/यू-1 दिनांक 05.01.1996 के माध्यम से अस्तित्व में आया। विश्वविद्यालय के मूल दर्शन और नीतियों को विश्वविद्यालय अधिनियम और क़ानून में वर्णित और स्थापित किया गया है। विश्वविद्यालय स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों को व्यक्ति और पेशेवर के रूप में सफल होने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल और समाज की सेवा करने के लिए आवश्यक मूल्य और संवेदनशीलता प्रदान करता है। विश्वविद्यालय खुद को सामाजिक न्याय और समानता सिद्धांतों द्वारा कायम उच्च गुणवत्ता वाली छात्रवृत्ति और अकादमिक कठोरता के एक सामाजिक रूप से जिम्मेदार शिक्षण समुदाय के रूप में प्रतिष्ठित करता है, जिसके लिए बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर ने अपने जीवनकाल के दौरान काम किया था। विश्वविद्यालय अपने शैक्षिक कार्यक्रमों को समृद्ध और मजबूत करने के लिए उत्तर प्रदेश और अन्य राज्यों के सांस्कृतिक, बौद्धिक और आर्थिक संसाधनों का उपयोग करता है।

उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान

उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान की स्थापना 31 जनवरी, 1991 में संस्कृति विभाग, उ0प्र0 के अधीन स्वायत्तशासी संस्था के रूप में की गई है। संस्थान का मुख्य उद्देश्य भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित जैन विधाओं का राष्ट्रीय सन्दर्भ में अध्ययन एवं तत्सम्बन्धी शोध करना तथा तीर्थंकरों की सांस्कृतिक महत्व की परम्परागत एवं आधारभूत मान्यताओं, मानवीय मूल्यों एवं कला कौशल का संरक्षण करना है। संस्थान द्वारा परिचर्चा, परिगोष्ठी, व्याख्यान, सम्मेलन, संगोष्ठी एवं राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार आदि आयोजित करना। जैन धर्म से सम्बन्धित विभिन्न पर्वों पर व्याख्यान माला, संगोष्ठी, वाद-विवाद प्रतियोगिता, पेंटिंग प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता आदि का आयोजन करना।
संस्थान का उद्देश्य नैतिक, आध्यात्मिक, अनुशीलन-अनुसंधान के द्वारा उन मानवीय मूल्यों का आंकलन करना है जो व्यापक मानव संस्कृति एवं सभ्यता के विकास का आधार बन सके और जिसके लिए जैन तीर्थंकरों के उदार तत्वों से अर्थवती प्रेरणा प्राप्त की जा सके। संस्थान का मुख्य उद्देश्य भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित जैन विधाओं का राष्ट्रीय सन्दर्भ में अध्ययन एवं तत्सम्बन्धी शोध करना तथा जैन तीर्थंकरों की सांस्कृतिक महत्व की परंपरागत आधारभूत मान्यताओं, मानवीय मूल्यो, बार तुम ला, अवशेषों, कलाओ और कला कौशल का संरक्षण और उन्हें बिकृत होने से बचाना होगा।

भारतीय हिन्दी परिषद

भारतीय हिन्दी परिषद की स्थापना 'प्रयाग विश्वविद्यालय' (इलाहाबाद विश्वविद्यालय) के तत्कालीन हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉक्टर धीरेन्द्र वर्मा की प्रेरणा और प्रयत्न से 3 अप्रैल, सन 1942 ई. को प्रयाग में हुई थी। हिन्दी के समस्त अंगों, भाषा, साहित्य तथा संस्कृति के अध्ययन तथा खोज को प्रोत्साहन देना और उसकी प्रगति का विशेष रूप से निरीक्षण करना इसका उद्देश्य है।
भारतीय विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक, हिन्दी तथा हिन्दी प्रेमी एवं हिन्दी के उच्च अध्ययन, अध्यापन और अनुसन्धान में रुचि रखने वाले व्यक्ति इस संस्था के सदस्य हैं। मुख्यतः विश्वविद्यालय अध्यापकों एवं अनुसन्धानकर्ताओं की संस्था होने के नाते परिषद अपने सामान्य उद्देश्य के अंतर्गत उच्चतर हिन्दी अध्यापन और अनुसन्धान के नियोजन एवं संगठन तथा उच्चतर शिक्षा के सन्दर्भ में हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास, उन्नयन, प्रचार एवं प्रसार पर विशेष बल देती है।

मुख्य संरक्षक

श्री जयवीर सिंह
माननीय मंत्री, संस्कृति एवं पर्यटन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार

संरक्षक

प्रो० अभय कुमार जैन
उपाध्यक्ष, उ0प्र0 जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ
प्रो० संजय सिंह
माननीय कुलपति, बी0बी0यू0 यू0 ,लखनऊ
प्रो० पवन अग्रवाल
सभापति, भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयागराज

संरक्षक मंडल

प्रो० सुरेशचंद्र जैन
कुलाधिपति, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद
प्रो० मुरली मनोहर पाठक
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली
प्रो० राणा कृष्ण पाल सिंह
कुलपति, डॉ० शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ
प्रो०पी०के० द्वासोरा
कुलपति, मंगलायतन विश्वविद्यालय, अलीगढ़
प्रो०बी०आर०डूगर
कुलपति, जैन विश्वभारती लाडनू, नागौर
प्रो०सुनील कुलकर्णी
उपाध्यक्ष,भारतीय हिंदी परिषद् निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा
प्रो० योगेंद्र प्रताप सिंह
प्रधानमंत्री, भारतीय हिंदी परिषद् प्रयागराज
प्रो० शिल्पी वर्मा
अध्यक्ष, आजादी का अमृत काल समिति, बी0बी0यू0यू0 लखनऊ
प्रो० सर्वेश सिंह
अधिष्ठाता, भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ बी0बी0यू0यू0लखनऊ
प्रो० राजशरण शाही
शिक्षाशास्त्र विभाग, बी0बी0यू0यू0 लखनऊ

परामर्शदाता मंडल

श्री मुकेश कुमार मेश्राम
प्रमुख सचिव, संस्कृति विभाग, उ0प्र0सरकार
श्री शिशिर
निदेशक, संस्कृति विभाग
श्री राकेश चंद्र शर्मा
विशेष सचिव ,संस्कृति विभाग, उ0प्र0 सरकार
श्री अमित कुमार अग्निहोत्री
निदेशक, उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ
डॉ०राकेश सिंह
निदेशक, अंतरराष्ट्रीय बौद्ध संस्थान, लखनऊ
प्रो० त्रिभुवननाथ शुक्ल
साहित्य मंत्री, भारतीय हिंदी परिषद्, प्रयागराज
प्रो०नवीन अरोड़ा
अधिष्ठाता ,पर्यावरण विज्ञान विद्यापीठ, बी0बी0यू0यू0 लखनऊ
प्रो० रामपाल गंगवार,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग ,बी0बी0यू0यू0 लखनऊ

आयोजन समिति

डॉ० बलजीत कुमार श्रीवास्तव,
संयोजक, हिंदी विभाग, बी० बी0यू0यू0 लखनऊ
डॉ०अमरेंद्र त्रिपाठी,
प्रबंध मंत्री, भारतीय हिंदी परिषद् प्रयागराज
डॉ० विनय सेन सिंह,
कोषाध्यक्ष,भारतीय हिंदी परिषद् प्रयागराज
डॉ० शिव शंकर यादव,
हिंदी विभाग बी0बी0यू0यू0 लखनऊ
डॉ० नमिता जैसल,
हिंदी विभाग, बी0बी0यू0यू0,लखनऊ
डॉ० प्रीति राय,
हिंदी विभाग बी0बी0यू0यू0,लखनऊ
डॉ० महेंद्र पाठी,
पत्राकारिता विभाग, बी0बी0यू0यू0, लखनऊ
डॉ० सुभाष मिश्रा,
शिक्षा शास्त्र विभाग बी0बी0यू0यू0 लखनऊ
डॉ० रवि शंकर वर्मा,
उद्यान विज्ञान विभाग, बी0बी0यू0यू0,लखनऊ
डॉ० अरविंद सिंह,
पत्राकारिता विभाग, बी0बी0यू0यू0, लखनऊ
डॉ० सुदर्शन, चक्रधारी
इतिहास विभाग, बी0बी0यू0यू0, लखनऊ

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करुणा

राष्ट्रीय - संगोष्ठी

भारतीय ज्ञान परंपरा में जैन साहित्य का अवदान

(दिनांक 17-18 फरवरी 2024)

आयोजक

उ0 प्र0 जैन विद्या शोध संस्थान, लखनऊ
(संस्कृति विभाग, उ0 प्र0 सरकार)
हिन्दी विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ
भारतीय हिन्दी परिषद,
प्रयागराज (भारत)

संयोजक :

डॉ. बलजीत श्रीवास्तव
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ
मो0 न0 :- 9451087259, ई-मेल : rastriyasangosthibbau2024@gmail.com

भारतीय ज्ञान परंपरा में जैन साहित्य का अवदान

भारतीय ज्ञान और विचार परंपरा अत्यंत समृद्ध है।भारतीय ज्ञान, संस्कृति और दर्शन का विश्व में व्यापक प्रभाव पड़ा है। भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति अध्यात्म से अनुप्राणित है जिसके मूल में लोककल्याण का भाव है।वेदों से अनुप्राणित हमारी ज्ञान परंपरा विभिन्न धार्मिक एवम आध्यात्मिक मतों से पल्लवित पुष्पित होती हुई, निरंतर क्रियाशील है।

आज के वर्तमान परिवेश में जहा सम्प्रदायवाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, लोलुपता, गलाकाट प्रतियोगिता के कारण मनुष्य आतंकित है,मनुष्यता संकटग्रस्त है। ऐसे में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनरावलोकन, हमारे लिए पाथेय बन सकता है।

भारत में जन्में -सनातन,बौद्ध,जैन धर्म अपनी सहिष्णुता,अहिंसा,सौहार्द,प्रेम,भाईचारा,दुखकातरता,कर्तव्यपरायणता आदि सनातन मूल्यों के कारण विश्व मानस के आकर्षण का केंद्र रहे हैं। भारतीय सनातन ज्ञान परंपरा में जैन धर्म,दर्शन और साहित्य का भी विशिष्ट एवम महत्त्वपूर्ण योगदान है।इसने भारतीय सनातन-मूल्यों को समाहित करके विश्वकल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर-आदिनाथ ऋषभदेव ने "कृषि करो और ऋषि बनो", जैसा पुरुषार्थ का मंत्र देकर, जीविकोपार्जन के लिए असि, मसि,कृषि,विद्या,शिल्प एवम वाणिज्य छह कर्मों पर जोर दिया। चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने "अनेकांतवाद" का दर्शन प्रदान करके विश्व में व्याप्त अविश्वास,असम्मान और दुराग्रह को एक करने का समाधान प्रस्तुत किया जिससे व्यापक मानवतावादी दृष्टि विकसित हुई।"सर्वोदय" भावना के मूल में भी यही दृष्टि विद्यमान है। जैन साहित्य एवम दर्शन जातिवाद से नहीं मानवता और विश्वबंधुत्व की भावना से युक्त है। समानता, सापेक्षता, आत्मानुशासन, आत्म एवम व्यक्ति स्वातंत्र्य आदि, जैन दर्शन के सार्वभौमिक पक्ष हैं।यह अहिंसा का विस्तार करके हिंसा के निषेधात्मक पक्ष को मानने वाला है।

इस दर्शन में केवल मनुष्य की ही नहीं अपितु वनस्पति,जल एवम पशु - पक्षियों के प्रति भी प्रेम और चिंता को व्यापक स्तर पर देखा गया है।वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से इस वैचारिकी का कालजयी महत्त्व है।

विश्वबंधुत्व के प्रचार के लिए जैन दर्शन में अणुव्रत का प्रावधान किया गया है अर्थात व्यक्ति अपने जीवन में जो हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील तथा परिग्रह के वशीभूत रहता है, वहीं जैन धर्म, अहिंसा, सत्य,अचौर्य, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह के अणुव्रत को प्रस्तुत करता है। हम सभी जानते हैं कि महात्मा गांधी ने भी सत्य,अहिंसा और अपरिग्रह को अपनाया और मानवता के दूत बन गए। यूनेस्को ने 2 अक्टूबर को अहिंसा दिवस घोषित किया।

जैन दर्शन में 'योग' को भी महत्व दिया गया है जैन तीर्थंकरों की विभिन्न प्रतिमाएँ खड्गासन एवं पद्मासन मुद्रा की है। वर्तमान में मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए 'योग' प्रमुख पद्धति बनकर उभरा है। यूनेस्को ने भी भारत के शाश्वत जीवन मूल्यों को अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति देने के लिए 21 जून को 'विश्व योग दिवस' के रूप में घोषित किया है।

इस जैन धर्म का प्रभाव साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक है। वैसे तो जैन साहित्य मूलतः प्राकृत भाषा में लिखा गया था किंतु जैन आचार्यों ने संस्कृत, अपभ्रंश और हिंदी में भी प्रणयन किया।

हिंदी साहित्य के आदिकाल में जैन आचार्यो एवं कवियों के अनेक ग्रन्थ मिलते हैं। आचार्य हेमचंद्र का सिद्ध हेम शब्दानुशासन, विमलदेव सूरि का पउम चरिउ, पुष्पदंत का हरिवंश पुराण, यशकीर्ति का पांडव पुराण, और धुधू का पद्मम् पुराण उल्लेख्य है।

यह पउमचरिउ और हरिवंश पुराण, राम और कृष्ण की कथा-काव्य परंपरा से प्रभावित है।

हिंदी जैन साहित्य में काव्य,नाटक,ज्योतिष, आयुर्वेद, व्याकरण, गणित आदि विधाओं और विषयो पर लिखा गया है।

इसी प्रकार स्थापत्य,शिल्प,चित्रकला,चिकित्सा,वाणिज्य व्यापार आदि संबंधी बहुविध सामग्री का समावेश है। समय सापेक्ष इनकी उपयोगिता को देखते हुए इस संगोष्ठी के माध्यम से इन सभी पंक्षों की चर्चा के साथ-साथ इनकी वर्तमान प्रासंगिकता पर विचार होगा।

संगोष्ठी के प्रस्तावित उप- विषय:

- जैन साहित्य का उद्भव और विकास
- जैन साहित्य का महत्व
- हिंदी जैन साहित्य का सामाजिक सरोकार
- जैन- धर्म,दर्शन और मानव
- जैन शिक्षा- दर्शन का वर्तमान शिक्षा पर प्रभाव
- जैन धर्म का साहित्यिक अवदान
- जैन दर्शन की बहुलतावादी दृष्टिकोण
- सर्वोदय की भाव-भूमि पर अनेकांतवाद
- उत्तराध्ययन में रंग चिकित्सा पद्धति
- बीसवीं शताब्दी की जैन संस्कृत रचनाएं, उनका वैशिष्ट्य और प्रदेय
- जैन वांग्मय में प्रातिहार्य
- जैन संस्कृत एवं प्राकृत व्याकरण
- प्राकृत और मुक्तक काव्य
- जैन योग के विभिन्न भेद
- हिंदी जैन साहित्य के विकास में जैन आचार्यो का योगदान
- हिंदी साहित्य के विकास में जैन कवियों का योगदान
- जैन साहित्य और पर्यावरण
- जैन वैचारिकी पर आधारित गद्य एवं पद्य की रचनाएं

पंजीकरण प्रपत्र

राष्ट्रीय संगोष्ठी
(17-18 फरवरी, 2024)

विषयः 'भारतीय ज्ञान परंपरा में जैन साहित्य का अवदान'

नाम.....

पद नाम.....

विश्वविद्यालय / महाविद्यालय / संस्था का नाम.....

दूरभाष : ऑफिस : .....

पता.....

मो०.....

ई-मेल :.....

शोधपत्र का शीर्षक:.....

धनराशि.....

दिनांक..... हस्ताक्षर

आयोजन स्थल
पृथ्वी एवं पर्यावरण विज्ञान विद्यापीठ सभागार,
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोधप्रपत्रः-

कृतिदेव 10 फॉन्ट में 05 फरवरी 2024 तक rastriyasangosthibbau2024@gmail.com / drbaljeetsrivastava@gmail.comपर भेजें। संगोष्ठी के उपरांत चयनित आलेखों का प्रकाशन किया जाएगा।

पंजीकरण संगोष्ठी से पूर्व विभाग आकर अथवा संगोष्ठी के दिन कराया जा सकता है।

पंजीकरण शुल्क स्थानीय प्रतिभागियों के लिए रू. 1000/
वाह्य प्रतिभागियों के लिए रू. 1500/-

पंजीकरण दिये गए लिंक https://forms.gle/JsrczewZmjrU1Zsm8 के माध्यम से (2900101016049 RASHTRIYA SANGOSHTHI HINDI VIBHAG, IFSC- CNRB0002900) पर ऑनलाइन भी किया जा सकता है।